९ : चिडिया की बच्ची

प्रश्नावली

<u>कहानी से</u>

प्रश्न 1. किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था?

प्रश्न 2. माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3. माधवदास के बार-बार समझाने पर भी चिड़िया सोने के पिंजरे और सुख-सुविधाओं को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी। दूसरी तरफ़ माधवदास की नज़र में चिड़िया की ज़िद का कोई तुक न था। माधवदास और चिड़िया के मनोभावों के अंतर क्या-क्या थे? अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 4. कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा? चालीस-पचास या इससे कुछ अधिक शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

प्रश्न 5. माँ मेरी बाट देखती होगी'-नन्ही चिड़िया बार-बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी जिंदगी में माँ का क्या महत्त्व है।

प्रश्न 6. इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?

कहानी से आगे

प्रश्न 1. इस कहानी में आपने देखा कि वह चिड़िया अपने घर से दूर आकर भी फिर अपने घोंसले तक वापस पहुँच जाती है। मधुमक्खियों, चींटियों, ग्रह-नक्षत्रों तथा प्रकृति की अन्य विभिन्न चीज़ों में हमें एक अनुशासनबद्धता देखने को मिलती है। इस तरह के स्वाभाविक अनुशासन का रूप आपको कहाँ-कहाँ देखने को मिलता है? उदाहरण देकर बताइए।

प्रश्न 2. सोचकर लिखिए कि यदि सारी सुविधाएँ देकर एक कमरे में आपको सारे दिन बंद रहने को कहा जाए तो क्या आप स्वीकार करेंगे? आपको अधिक प्रिय क्या होगा-'स्वाधीनता' या 'प्रलोभनोंवाली पराधीनता'? ऐसा क्यों कहा जाता है कि पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं मिल पाता। नीचे दिए गए कारणों को पढ़ें और विचार करें-

(क) क्योंकि किसी को पराधीन बनाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति स्वयं दुखी होता है, वह किसी को सुखी नहीं कर सकता।

(ख) क्योंकि पराधीन व्यक्ति सुख के सपने देखना ही नहीं चाहता।

(ग) क्योंकि पराधीन व्यक्ति को सुख के सपने देखने का भी अवसर नहीं मिलता।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. आपने गौर किया होगा कि मनुष्य, पशु, पक्षी-इन तीनों में ही माँ! अपने बच्चों का पूरा-पूरा ध्यान रखती हैं। प्रकृति की इस अद्भुत देन का अवलोकन कर अपने शब्दों में लिखिए।

<u>भाषा कि बात</u>

प्रश्न 1. पाठ में <u>पर</u> शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं-

(क) गुलाब की डाली <u>पर</u> एक चिड़िया आन बैठी।

(ख) कभी <u>पर</u> हिलाती थी।

(ग) <u>पर</u> बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई।

तीनों 'पर' के प्रयोग तीन उद्देश्यों से हुए हैं। इन वाक्यों का आधार लेकर आप भी 'पर' का प्रयोग कर ऐसे तीन वाक्य बनाइए जिनमें अलग-अलग उद्देश्यों के लिए 'पर' के प्रयोग हुए हों।

प्रश्न 2. पाठ में तैंने, छनभर, खुश करियो-तीन वाक्यांश ऐसे हैं जो खड़ीबोली हिंदी के वर्तमान रूप में तूने, क्षणभर, खुशकरना लिखे-बोले जाते हैं लेकिन हिंदी के निकट की बोलियों में कहीं-कहीं इनके प्रयोग होते हैं। इस तरह के कुछ अन्य शब्दों की खोज कीजिए।

उत्तर

<u>कहानी से</u>

उत्तर 1– माधवदास ने अपने लिए एक नई संगमरमर की कोठी बनवाई थी और उसका रहन- सहन अमीरों जैसा है। वो चिडिया को धन का लोभ देते हुए कहता है कि मै तेरे लिए सोने का पिंजरा बनवा दुंगा और तू जो माँगेगी वो दूँगा। उसकी इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि उसका जीवन संपन्नता से भरा है ।

वहीं दूसरी ओर ऐसा भी लगता है कि धन-संपन्न होने के बावजूद भी वे सुखी नहीं है। वो चिड़िया से कहते हैं-"मेरा दिल वीरान है। वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है?" इससे यह स्पष्ट है कि वे सुखी नहीं थे।

उत्तर 2- माधवदास ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि उसे चिड़िया बहुत ही सुन्दर और प्यारी लगी। वह चिड़िया को सदा के लिए अपने पास पिंजरे में कैद करके रखना चाहता था। उसे देखकर वह अपना मन बहलाना चाहता था।माधवदास आत्म केन्द्रित है। वो अपनी खुशी के लिए, ऐसा कर रहा था। इसलिए माधवदास की इस भावना में उसका निजी स्वार्थ है।

उत्तर 3- यहाँ माधवदास और चिड़िया के मनोभाव एक दूसरे से एकदम विपरीत हैं। एक तरफ माधवदास के लिए धन-संपत्ति, सुख-सुविधा ही जीवन के अमुल्य तत्व हैं, वहीं दूसरी ओर चिड़िया के लिए ये सभी सुख सुविधाएँ व्यर्थ थी। चिड़िया के लिए स्वचछंदता और अपनी माँ के प्रेम से बडकर कुछ नहीं है। उसे सोने-चाँदी, हीरे-मोती की तुलना में स्वतंत्रता

और अपनी माँ का स्नेह अधिक प्यारा था। अर्थात चिड़िया की खुशी भौतिक सुखों से अलग भावनात्मक सुखों में है। परन्तु माधवदास के लिए धन दौलत ही सर्वोपरि है। उसके सामने भावनाएँ मूल्यहीन हैं।

उत्तर 4- कहानी के अंत में हमने पढ़ा कि सेठ के सभी प्रयासों के बावजूद भी नन्ही चिड़िया सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने में सफल होती है। यह इस कहानी का सुखद अंत है ऐसा प्रतीत होता है कि अच्छाई की बुराई पर जीत हो गई। चिड़िया सुरक्षित अपनी माँ के पास पहुँच जाती है। चिड़िया के जीवन का सोख उसके बंधन मुक्त होकर स्वच्छंदता पूर्वक आकाश में उड़ने में है न कि किसी स्वर्ण के पिंजरे में कैद रहने में। वह अपने परिवार तथा अपनी माँ का स्नेह पाकर खुश रहती है। यह पढकर मुझे बहुत खुशी हुई ।

उत्तर 5- हमारे जीवन में माँ का स्थान सर्वोपरि है। माँ बहुत मूल्यवान होती है। माँ अपने बच्चें की खुशी में खुश होती है तथा बच्चों के किसी भी प्रकार के कष्ट में हमेशा, बचाए रखने की अथक उनके साथ खडी रहती है। माँ हमें जन्म देती है, हमारा पालन-पोषण करती है हमे हर संकट से बचाए रखने के अथ्क प्रयास करती । हम माँ के ऋण से कभी भी मुक्त नहीं हो सकते। इसी तरह का स्नेह चिड़िया तथा उसकी माँ का भी था। इसी कारण चिड़िया बार-बार माँ को स्मरण करके उसके पास जाने की ज़िद्द कर रही थी।

उत्तर 6- इस कहानी का शीर्षक ‘जीवन का असली सुख’ होगा क्योंकि यहाँ जीवन के सुख को लेकर दो विचारों की विपरीत्ता है। एक तरफ जहाँ

सेठ माधवदास के लिए धन-दौलत ही जीवन का सुख है। वहीं दूसरी ओर नन्ही चिड़िया के लिए माँ अमूल्य रत्न से भी अधिक मूल्यवान है।

कहानी से आगे

उत्तर 1- प्रकृति के अलग-अलग रूपों में हमें अनुशासन देखने को मिलता है –

(i) सूर्य नियमित रूप से सुबह उदय होता है तथा शाम को अस्त हो जाता है।

(ii) चंद्रमा भी अपने समय से आसमान मे आता और जाता है ।

(iii) पृथ्वी नियमानुसार सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है।

(iv) ऋतुऐं भी नियमानुसार ही आती तथा जाती हैं।

उत्तर 2- सभी सुख-सुविधाओं के

बाद भी हमें पराधीनता स्वीकार कभी नहीं होती।अनेक प्रलोभन होने के बावजूद भी स्वाधीनता उस पराधीनता से भी अधिक प्रिय लगती है। जीवन में स्वतंत्रता बहुत महत्वपूर्ण है। सभी सुख सुविधाएँ और धन मिलकर भी इसके मूल्य को कभी कम नहीं कर सकते। एक परधीन व्यक्ती को कभी सपने देखने और उनको, पूरा करने का अवसर नहीं मिलता।वह हमेशा घुट- घुटकर जीने पर विवश रहता है।

अनुमान और कल्पना

उत्तर 1- माँ अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखती है। फिर चाहे वो मनुष्य हो या पशु-पक्षी सभी में ऐसा देखने को मिलता है। माँ के वात्सल्य की भावनाएँ मनुष्य हो या पशु-पक्षी सभी मे देखने को मिलती हैं। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है इसलिए ऐसी भावना को होना स्वभाविक है। परन्तु ये पशु-पक्षियों में भी देखा जाता है कि माँ अपने बच्चों के लिए सदैव चिंतित रहती है। माँ की ममता और वातसल्य का दर्शन हर प्राणी में होता है । यह प्रकृति की अद्भुत देन है।

भाषा कि बात

उत्तर 1- (i) मेज़ पर किताब रखी है।

(ii) चिड़िया के पर बहुत सुंदर हैं।

(iii) पर मै नहीं आ पाऊँगा।

उत्तर 2- मन्नै– मैंने

अइयो – आओ

जइयो – जाओ

करियो – करो।